डॉ. बिभा कुमारी

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

हिंदी भाषा का मानकीकरण

(बीए हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, षष्ठ पत्र)

भाषा के मानकीकरण से तात्पर्य है भाषा का एक विशेष स्तर निर्धारित करना, जिसमें भाषा के प्रयोग हेतु नियमों का निर्धारण किया गया हो। इससे भाषा को विश्वस्तर पर एकरूपता प्राप्त होती है। अमान्य एवं अशुध्द प्रयोगों को त्यागकर मान्य एवं शुध्द रूप का ही प्रयोग किया जाता है। मानकीकरण हेतु ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आदि के लिए जितने विविध रूप प्रयोग किये जाते हैं, उनमें से किसी एक रूप को स्वीकार किया जाना चाहिए। प्रचलित रूपों में से जो रूप सबसे अधिक उपयुक्त हो उसे ही स्वीकार किया जाना चाहिए। ऐसा करने से वृहद समाज के मध्य भाषा के प्रयोग को लेकर एकरूपता आएगी और अलग – अलग रूपों के प्रयोग के कारण उत्पन्न होने वाले भ्रम और द्वंद्व से मुक्ति मिलेगी। मानकीकरण वाचिक और लिखित दोनों स्तर पर अत्यावश्यक है, अर्थात जब हम कहते हैं कि भाषा का मानकीकरण हो रहा है तब भाषा के साथ साथ लिपि का भी मानकीकरण हो रहा होता है। मानकीकरण का सबसे बड़ा प्रभाव यह होता है कि किसी भी भाषा की शब्दावली एकरूपता प्राप्त करती है, व्याकरण के स्तर पर भ्रम और द्वंद्व पूर्णतः समाप्त हो जाता है। व्याकरण की विशुध्दता अधिक प्रामाणिक हो जाती है जिससे व्याकरण का उद्देश्य पूर्ण रूप से सफल होता है। व्याकरण का प्रमुख उद्देश्य ही है – शुध्द भाषा – प्रयोग। भाषा जब व्याकरण और शब्दावली के स्तर पर एकरूपता प्राप्त करती है तो निश्चित रूप से भाषा अधिक बोधगम्य हो जाती है। इससे लोगों के लिए उस भाषा में बोलना, लिखना, पढ़ना आसान हो जाता है। जैसे जैसे भाषा वृहद समाज के लिए सरल – सहज, सुबोध होती जाती है वैसे – वैसे भाषा की प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होती जाती है। किसी भी भाषा को विश्वस्तरीय बनाने के लिए उसका मानकीकरण आवश्यक होता है। भाषा को मानक रूप प्रदान करने की प्रक्रिया ही मानकीकरण है। अंग्रेज़ी के 'स्टैंडर्ड लैंग्वेज' के प्रतिशब्द के रूप में हिंदी में 'मानक भाषा' शब्द प्रयुक्त किया जाने लगा। डॉ. रघुवीर ने स्टैंडर्ड लैंग्वेज के लिए 'प्रमाप' शब्द दिया था, परंतु प्रयोग में वह आ नहीं सका। कुछ विद्वानों ने 'मानक भाषा' शब्द के प्रचलन से पूर्व परिनिष्ठित भाषा, टकसाली भाषा, आदर्श भाषा, शुध्द भाषा आदि शब्द दिए थे, परंतु 'मानक भाषा' शब्द ही प्रमुखता से प्रचलित हो पाया और हिंदी को विश्वभाषा बनाने की तैयारी करते हुए उसमें शब्दावली, लिपि और व्याकरण के स्तर पर एकरूपता स्थापित करने का कार्य करने लगा। मानक भाषा में शुध्दता पर विशेष बल दिया जाता है। अतः मानक – भाषा व्याकरण सम्मत, विशुध्द, परिनिष्ठित, परिमार्जित होती है। स्टिवर्ट ने मानक भाषा के मुख्य रूप से चार लक्षण बताए हैं –

1. मानकीकरण 2. स्वायत्तता 3. ऐतिहासिकता 4. जीवंतता

मानकीकरण की प्रक्रिया से गुजरकर ही कोई भाषा मानक बनती है। मानकीकरण की प्रक्रिया में भाषाई एकरूपता, वर्तनी की शुद्धता, शब्दावली की एकरूपता, उच्चारण की एकरूपता इत्यादि बिंदुओं पर प्रमुखता

से ध्यान दिया जाता है। विश्व स्तर की जितनी भी भाषाएँ हैं वे मानकीकरण की लंबी प्रक्रिया से गुजरकर मानक हुई हैं और विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित हुई है।

स्वायत्तता किसी भी भाषा के मानक होने की अनिवार्य शर्त है। जो भाषा अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है, प्रयोजन और प्रकार्य के विविध आयामों पर खरी उतरती है, अपनी स्वायत्तता से सम्पूर्ण जगत में पहचानी जाती है, निश्चित रूप से वह मानक भाषाओं की कतार में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करवा पाती है।

किसी भी मानक भाषा की अपनी ऐतिहासिकता होती है। भाषा हजारों वर्षों में अपना मानक रूप सुस्थिर कर पाती है। अतः मानकीकरण हेतु भाषा का अपना इतिहास होना निश्चित है।

कोई भी भाषा अपना मानक रूप तभी सुनिश्चित कर पाती है, जब वह जीवंत होती है। जीवंत भाषाओं का ही निरंतर विकास होता रहता है और वह अपना मानक रूप सुनिश्चित कर पाती है।